डॉ. मनीष कुमार नेमा

विदर्भ क्षेत्र के अतीत, वर्तमान एवं भविष्य को सहेजती जीवनदायिनी वैनगंगा

अपनी यात्रा के दौरान वैनगंगा को अनेकानेक स्थानीय नदियों का सहयोग प्राप्त होता है। दाहिनी ओर से वैनगंगा की प्रमुख सहायक नदियों में बावनथड़ी, देवनदी, चंदन, कान्हा, मूल, हीरा आदि प्रमुख हैं। वहीं बायें ओर वर्धा, कथनी, सोहबिरी, ठनवर, ठेल, बाग चुलबंध, गढवी, खोबरागडी आदि नदियां दूसरे ओर से मुख्य सहायक नदियां हैं। वैनगंगा को बेवा दिदि, वैनया, वैणअ, आदि उपनामों से भी जाना जाता है। ठनवर नदी मंडला जिले के चिरैडोंगरी के जंगल से निकलती है। यह वैनगंगा नदी से धूती बांध से पहले, सिवनी जिले और मंडला जिले की सीमा पर, नैनपुर वन रेंज में मिलती है। ठनवर नदी के तट पर बेजगांव गांव में एक मध्यम आकार का बांध है, जो 1980 में खोला गया था। बांध में जमा नदी के पानी का उपयोग पचास गांवों के खेत की सिंचाई के लिए किया जाता है। चंदन नदी बालाघाट जिले की एक महत्वपूर्ण नदी है।

परिचय

वैनगंगा नदी मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की एक प्रमुख नदी है। यह गोदावरी नदी की एक प्रमुख सहायक नदी है। वैनगंगा नदी दक्षिण दिशा में प्रवाहित होती है। वैनगंगा नदी का उद्गम मध्य प्रदेश के सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के दक्षिणी भाग में सिवनी जिले के मुंडारा गांव से लगभग 12 किलोमीटर दूर परसवाड़ा पठार के रजोलाताल से होता है। यह नदी चपराला नामक स्थान, जो जिला गडचिरोली महाराष्ट्र में तेलंगाना की सीमा पर स्थित है, के पास वर्धा नदी के साथ मिलकर प्राणहिता नदी का निर्माण करती है। और अंतोगत्वा प्राणहिता नदी तेलंगाना में गोदावरी नदी में मिल जाती है। वर्धा से मिलन के पूर्व वैनगंगा नदी की कुल लंबाई 602 किलोमीटर है जिसमें लगभग 275 किलोमीटर मध्य प्रदेश में, 295 किलोमीटर महाराष्ट्र राज्य में प्रवाहित होती है एवं लगभग 32 किलोमीटर का प्रवाह इन दोनों राज्यों की सीमा के रूप में पाया जाता है। वैनगंगा के बारे में लिखित साहित्य बहुत कम उपलब्ध है। फिर भी नदी के बेसिन में रहने वाले आमजनों का मानना है कि ''ये माँ गंगा ही तो है!''। स्थानीय लोककथाओं से संकेत मिलता है कि वैनगंगा वास्तव में वृद्ध-गंगा (या पुरानी गंगा) है और यह शक्तिशाली गोदावरी नदी की मुख्य सहायक नदियों में से एक है जिसे दक्षिण-गंगा भी कहा जाता है।

वैनगंगा की यात्रा

वैनगंगा नदी मुख्य रुप से मध्य प्रदेश के सिवनी व बालाघाट जिलों एवं

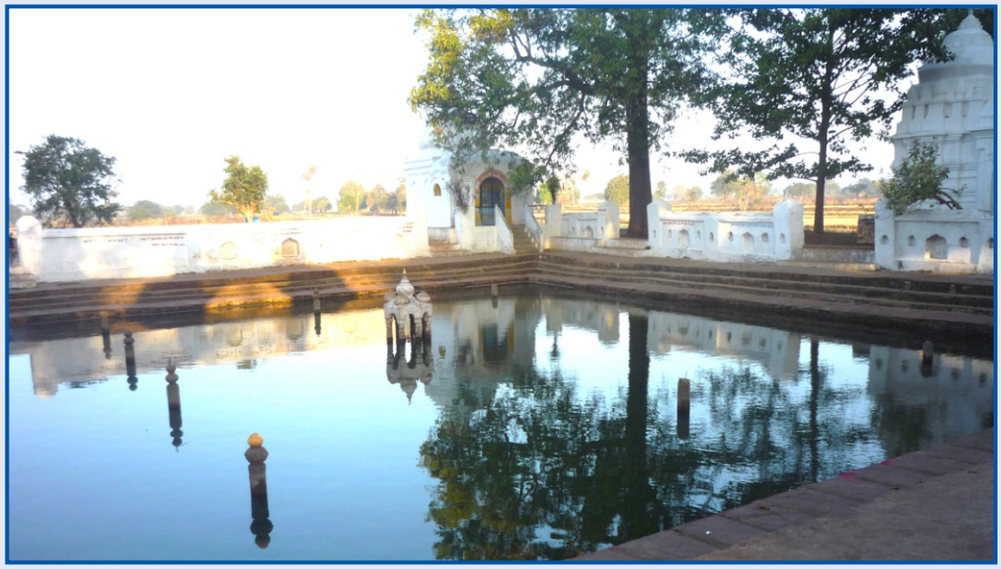

वैनगंगा नदी का उद्गम स्थल राजोताल कुंड, मुंडारा गाँव जिला सिवनी (मध्य प्रदेश)

महाराष्ट्र के भंडारा व गडचिरौली जिलों से होकर बहती है। वैनगंगा का उद्गम समतल भूभाग पर है। प्रारंभ में, यह उत्तर की ओर बहती है और फिर सतपुड़ा पर्वत श्रेणीयों के बहिर्वाहों के कारण इसका मार्ग बंद होने से परिवर्तित हो जाता हैं। यहां से आगे, नदी फिर बालाघाट जिले के माध्यम से दक्षिण की ओर बहती है और फिर भंडारा और गोदिया जिलें के माध्यम से महाराष्ट्र राज्य में प्रवेश करती है। नागपुर, चंद्रपुर और गढ़चिरौली जिलों के कुछ हिस्सों से होकर बहती है। गढ़चिरौली शहर से मार्कंडा शहर तक एक सुंदर हुक जैसी घुमावदार संरचना देखी जा सकती है। वहां से कुछ किलोमीटर की दूरी पर वर्धा-वैनगंगा संगम होता है। और फिर इस नदी का नाम प्राणहिता हो जाता है, जो तेलंगाना के कालेश्वरम में गोदावरी से मिलती है। वैनगंगा नदी का प्रवाह मुख्य रूप से मानसून के मौसम में होने वाली वर्षा पर निर्भर करता है। इस क्षेत्र में लगभग 640 मिलीमीटर की वार्षिक वर्षा होती है। यह क्षेत्र गर्मीओं में अधिकतम 47 डिग्री तथा सर्दियों में न्यूनतम 7.8 डिग्री तापमान के साथ उष्णकटिबंधीय जलवायु परिस्थितियों का अनुभव करता है।

सहायक नदियाँ

अपनी यात्रा के दौरान वैनगंगा को अनेकानेक स्थानीय नदियों का सहयोग प्राप्त होता है। दाहिनी ओर से वैनगंगा की प्रमुख सहायक नदियों में बावनथड़ी, देवनदी, चंदन, कान्हा, मूल, हीरा आदि प्रमुख हैं। वहीं बायें ओर वर्धा, कथनी, सोहबिरी, ठनवर, ठेल, बाग चुलबंध, गढवी, खोबरागडी आदि नदियां दूसरे ओर से मुख्य सहायक नदियां हैं। वैनगंगा को बेवा दिदि, वैनया, वैणअ, आदि उपनामों से भी जाना जाता है। ठनवर नदी मंडला जिले के चिरैडौंगरी के जंगल से निकलती है। यह वैनगंगा नदी से धूती बांध से पहले, सिवनी जिले और मंडला जिले की सीमा पर, नैनपुर वन रेंज में मिलती है। ठनवर नदी के तट पर बेजगांव गांव में एक मध्यम आकार का बांध है, जो 1980 में खोला गया था। बांध में जमा नदी के पानी का उपयोग पचास गांवों के खेत की सिंचाई के लिए किया जाता है। चंदन नदी बालाघाट जिले की एक महत्वपूर्ण नदी है। यह बारासिवनी से होकर बहती है। नहलेसरा बांध चंदन नदी पर बना है। नदी के किनारे की प्रमुख विशेषताओं में से एक रामपयाली का मंदिर है। महाराष्ट्र के महलगाँव (मुरदरा) गाँव में चंदन नदी का वैनगंगा मिलन हो जाता है।

बावनथडी, वैनगंगा एक महत्वपूर्ण सहायक नदी है जो मध्य प्रदेश के सिवनी जिले के कुरई पठार से निकलती है। यह मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र को मोवाड और बोनका के पास विभाजित करती है। बावनथडी नदी मध्य प्रदेश के मोवाड के पास 48 किमी दक्षिण की ओर बहने के बाद वैनगंगा में मिल जाती है। इस नदी पर एक मध्यम आकार का बांध है जो मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र की कृषि भूमि को सिंचित करता है ।

कन्हान नदी वैनगंगा की सबसे लंबी सहायक नदी है। यह छिंदवाड़ा जिले के उत्तर-पश्चिमी क्षेत्र में सतपुड़ा रेंज के दक्षिणी किनारे पर पहाड़ियों से उद्गमित होती है । कन्हान नदी की प्रमुख सहायक नदी पेंच हैं। पेंच नदी का उद्गम छिंदवाड़ा ज़िले की जुन्नारदेव तहसील से लगे सतपुड़ा पर्वत श्रेणी के दक्षिण पठार से होता है। दक्षिणपूर्वी सीमा पर इसमे तीव्र मोड़ आता है और यह दक्षिण की ओर मुड़ जाती है। पहाड़ी क्षेत्र में उच्च ढलान पर नदी का बहाव तेज होने के कारण बरसात के समय यह नदी उग्र रूप धारण कर लेती है। जिससे इसमें बड़ी नदीयों के समान प्रवाह एवं भव्यता होती है कुलबेहरा नदी इसकी सहायक नदी है। पेंच नदी परासिया, छिंदवाडा, चोरई के माचागोरा बाँध से होते हुए झिलमीली, चाँद पहुँचती है। चाँद से कुछ किलोमीटर की दूरी पर कुलबेहरा नदी भी पेंच नदी से मिल जाती है। इन दोनों नदीयों के संगम से पेंच नदी का आकार और बड़ जाता है। आगे यह नदी सिवनी ज़िले के राष्ट्रीय उद्यान से होते हुए महाराष्ट्र में प्रवेश करती है। नागपुर ज़िले के तोतलाडोह बाँध से होते हुए यह नदी कन्हान नदी में मिल जाती है। नैनपुर वन क्षेत्र से उद्गमित होने वाली दो नदियाँ हलोन और चकोर भी वैनगंगा की कुछ प्रसिद्ध सहायक नदियाँ हैं। इन सहायक नदीयों के तट पर स्थित मुख्य नगर नैनपुर और पिंडराई हैं।

मुख्य जल परियोजनाए

भीमगढ़ डैम

मुख्य वैनगंगा नदी के ऊपर संजय सरोवर बांध या भीमगढ़ डैम नामक एक विशाल जलाशय है, जो कस्बा छपारा, जिला सिवनी, मध्य प्रदेश में स्थित है। यह वैनगंगा नदी पर मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र की सबसे बड़ी एवं संयुक्त परियोजना है। इस बांध को 1970 में निर्मित किया गया था। यह एशिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध (म्तजीमद कंउ) है तथा विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मिट्टी का बांध है। मुख्य नदी पर ही धूती बांध है, जो बालाघाट, मध्य प्रदेश में स्थित एक प्राचीन बांध है। यह एक सिंचाई परियोजना थी, जिसका निर्माण 1917 से लेकर 1923 के बीच में हुआ था। वैनगंगा नहर परियोजना मध्य प्रदेश की पहली नहर परियोजना थी जिसका निर्माण 1923 में किया गया था । जिसमें मुख्य नहर की लंबाई 45 किलोमीटर है तथा 35 किलोमीटर लंबी दो शाखाएं निर्मित की गई थी। इस परियोजना के माध्यम से बालाघाट (मध्य प्रदेश) तथा भंडारा (महाराष्ट्र) जिले की 4000 हेक्टेयर कृषि-भूमि सिंचित होती है। वैनगंगा की सहायक नदी बावनथड़ी पर राजीव सागर परियोजना का निर्माण

मुख्य वैनगंगा नदी पर स्थित भीमगढ़ डैम का जलाशय, छपारा, जिला सिवनी (म.प्र)

किया गया है जो कटंगी तहसील जिला बालाघाट मध्य प्रदेश में स्थित है।

माचागोरा बाँध परियोजना

पेंच नदी पर मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा ज़िले में चौरई तहसील के माचागोरा गाँव में मध्य प्रदेश जल संसाधन विभाग की पेंच व्यपवर्तन परियोजना (Pench Diversion Project) के अन्तर्गत एक बाँध गांव माचागोरा में बनाया गया है। यह एक बहुउद्देश्य परियोजना है इसमें कृषि सिंचाई हेतु जलापूर्ति, पेयजल आपूर्ति के साथ ही दो पावर प्लांट से 1320 मेगावाट की बिजली भी बनेगी। जिसका आदानी ग्रुप पहले ही अधिग्रहण कर चुका है। पेंच नदी पर निर्मित इस बाँध में जून 2016 से पानी का भराव शुरू हो चुका है। 8 गेट वाले एवं 41 के मीटर इस बाँध से 2017 से दायीं तटीय और बायीं तटीय मुख्य नहरों के माध्यम से खेतों तक पानी पहुंचने लगा है। पेंच डायवर्सन प्रोजेक्ट के नाम से इसे जाना जाता है।

गोसेखुर्द (इंदिरासागर) बांध परियोजना

वृद्धावस्था भंडारा जिले में पौनी के पास वैनगंगा नदी पर गोसेखुर्द बांध एक कंक्रीट ग्रेविटी बांध है जो 92 मीटर ऊंचा और 653 मीटर लंबा है। योजना आयोग की सिफारिश के बाद वर्ष 1995 में इसका निर्माण प्रारंभ हुआ था। इसे इंदिरासागर बांध परियोजना के रूप में भी जाना जाता है। इसकी स्थापना के उद्देश्य नागपुर, भंडारा और चंद्रपुर जिलों के गांवों को सिंचाई की सुविधा प्रदान करना, 2X12 मेगावाट की जल-विद्युत का उत्पादन और साथ ही साथ निकटवर्ती नगर परिषद व ग्रामपंचायत के लिए औद्योगिक एवं पेयजल आपूर्ति भी थे। 33 स्पिलवे गेट वाला यह एक विशाल बांध हैं जिसकी कुल क्षमता 1146 मिलियन क्यूबिक मीटर (MCM) है। वर्ष 2008 में निर्माण पश्चात गोसीखुर्द जलाषय में 2009 से जल भराव शुरू हुआ किन्तु कुछ पुनर्वास समस्याओं के कारण जलाशय अपनी 100% क्षमता तक नहीं भर सका। लेकिन इन समस्याओं के समाधान के बाद अंततः वर्ष 2020 में जनवरी माह को बांध अपनी पूरी क्षमता तक भर गया हैं।

बेसिन में उष्णकटिबंधीय क्षेत्र

वैनगंगा बेसिन में पाये जाने वाले उष्णकटिबंधीय वन क्षेत्र वास्तव में मध्य-भारतीय वनीय जैव-विविधता का

वैनगंगा नदी पर स्थित गोसेखुर्द बांध, पोनी, जिला भंडारा (महाराष्ट्र)

वैनगंगा नदी की सहायक नदी पेंच पर स्थित माचागोरा डैम, चौरई, जिला छिंदवाड़ा (म.प्र.)

प्रतिनिधित्व करते हैं। इस वन क्षेत्र में विशिष्ट शुष्क पर्णपाती पेड़ों का प्रभुत्व है। वनों में ऐन, साल, कीनो, महुआ, तेंदू आदि की विभिन्न प्रजातियों और अच्छी गुणवत्ता वाले बांस के कई इलाकों का आधिपत्य है। कन्हान नदी के आसपास के कुछ इलाकों में घास के विस्तृत मैदान भी पाये जाते हैं। इस क्षेत्र में जैव-विविधता का भंडार है, जिनमें कई दुर्लभ और लुप्तप्राय प्रजातियां शामिल हैं। पेंच, उमरेड-करहंडला, ताडोबा-अंधारी, नवेगांव, नागजीरा, छपराला सहित वाटरशेड में राष्ट्रीय बाघ अभ्यारण्य (National Tiger Park) और उनके गलियारों (Tiger Corridor) सहित पाँच से अधिक

संरक्षित क्षेत्र हैं। पेंच नदी के किनारे पेंच राष्ट्रीय उद्यान है। यह सतपुड़ा की पहाड़ियों में मध्य प्रदेश के सिवनी एवं छिंदवाड़ा जिले में स्थित है। रुडयार्ड किपलिंग ने अपने पुराने किताबी संस्करण में ''दा जंगल बुक'' एवं ''द सेकंड जंगल बुक'' में मोगली की कहानियां में वैनगंगा नदी का वर्णन किया है। लेकिन इन से परे, वैनगंगा बेसिन भारत में सबसे बड़े समुदाय-

मुख्य वैनगंगा नदी के ऊपर संजय सरोवर बांध या भीमगढ़ डैम नामक एक विशाल जलाशय है, जो कस्बा छपारा, जिला सिवनी, मध्य प्रदेश में स्थित है। यह वैनगंगा नदी पर मध्य प्रदेश एवं महाराष्ट्र की सबसे बड़ी एवं संयुक्त परियोजना है। इस बांध को 1970 में निर्मित किया गया था। यह एशिया का सबसे बड़ा मिट्टी का बांध (Earthen Dam) है तथा विश्व का दूसरा सबसे बड़ा मिट्टी का बांध है। मुख्य नदी पर ही धूती बांध है, जो बालाघाट, मध्य प्रदेश में स्थित एक प्राचीन बांध है। यह एक सिंचाई परियोजना थी, जिसका निर्माण 1917 से लेकर 1923 के बीच में हुआ था।

वैनगंगा नदी बेसिन की वनीय जैव-विविधता

नियंत्रित वनीय क्षेत्रों में से एक है। इस क्षेत्र के कई हजार गांवों को सामुदायिक वन अधिकार प्राप्त हैं। इस क्षेत्र की आबादी का एक बड़ा वर्ग अपने जीवन के निर्वाह और आजीविका के लिए वनोपज पर निर्भर है। जिसमें मुख्य रूप से चिरोंजी, महुआ, तेंदू पत्ता, खली, आदि का वनवासियों द्वारा संग्रहण एवं विक्रय शामिल है। इस क्षेत्र के लोगों की आय में वनों का लगभग 20-30% योगदान है। जहां पिछले दशकों में कूप-कटाई (coupe & felling) और अन्य वानिकी गतिविधियों के साथ वन-गुणवत्ता से समझौता नहीं किया गया है। यही बात इस बेसिन में विभिन्न समुदायों द्वारा जैव विविधता को देखने, संरक्षित और उपभोग करने के तरीकों को रोमांचक एवं जीवंत बनाता है।

वैनगंगा पुराणों में वर्णित महत्त्व

पुराणों में वर्णित कथा है कि भंडाक देश (आज का भंडारा जिला) के धर्मात्मा राजा बैन हमेशा भगीरथ गंगा स्नान को प्रयागराज जाते थे। वृद्धावस्था में शारीरिक कठिनाई होने पर राजा ने माँ गंगा से प्रार्थना की कि ऐसा वरदान दीजिए कि मैं हमेशा की तरह गंगा-स्नान करता रहूं। तब गंगाजी ने स्वयं प्रकट होकर कहा कि राजन तुम अपने कमंडल में गंगाजल भरकर अपने स्थान ले जाओ और जहां भी इस कमंडल से जल धरती पर बहेगा मैं वहीं प्रकट हो जाऊंगी। माँ गंगा के वचन अनुसार राजा कमंडल में जल लेकर अपने देश को कूच कर गये। रास्ते में विश्राम करने रुकने पर संयोगवंश कमंडल के गिर जाने से वहीं से गंगा की धारा बहने लगी। जहाँ कमंडल गिर गया था वह स्थान सिवनी जिले के मुंडारा के नाम से जाना जाता है। इससे दुखी हो राजा ने पुनः गंगाजी की प्रार्थना की। राजा के निवेदन करने पर गंगाजी ने सांत्वना देते हुए कहा कि सिवनी में गुप्त रूप से भगवान शिव का निवास है। मैं सिवनी की परिक्रमा करके तुम्हारे देश की राजधानी भंडारा पहुँच जाऊंगी। सिवनी के उद्गम स्थल मुंडारा से लखनवाड़ा, मुंगवानी, दिघौरी, छपारा आदि शहरों को पार करते हुये बालाघाट के रास्ते वैनगंगा नदी भंडारा पहुंचती है। तथा 641 किलोमीटर का सफर तय करके वैनगंगा दक्षिण की गंगा गोदावरी से मिलकर बंगाल की खाड़ी में भगीरथी माँ गंगा के साथ समुद्र में मिल जाती है।

पारंपरिक जल प्रबंधन प्रणाली

यदि हम अतीत को पलट कर देखें तो वैनगंगा बेसिन अपनी पारंपरिक कुशल जल प्रबंधन प्रणाली के लिए भी जाना जाता है जिसे मालगुजारी टैंक सिस्टम कहा जाता है। मालगुजारी टैंक गोंडकालीन राजाओं के महत्वपूर्ण योगदानों में से एक हैं। कहा जाता है कि इन टैंकों का निर्माण मालगुजारों (राजस्व संग्रहकर्ताओं) ने 16वीं शताब्दी के बाद से किया था। मालगुजारी प्रणाली मूल रूप से जमींदारी के समान एक राजस्व प्रणाली थी। यह गोंड काल से अस्तित्व में थी और ब्रिटिशकाल के दौरान जारी रही तथा मालगुजार नाम ब्रिटिश काल के दौरान दिया गया था । देश की स्वतंत्रता के बाद 1950 में सरकार द्वारा मालगुजारी प्रणाली को समाप्त कर दिया गया और सारे मालगुजार टैंक सरकार की संपत्ति बन गए। ये टैंक मुख्य रूप से भंडारा, गोंदिया, गढ़चिरौली, और महाराष्ट्र के चंद्रपुर तथा नागपुर जिलों के कुछ हिस्सों एवं मध्य प्रदेश के बालाघाट जिले में पाए जाते हैं।

विदर्भ क्षेत्र में ऐसे हजारों टैंक हैं,

वैनगंगा नदी बेसिन में स्थित जंभोरा, जिला भंडारा (महाराष्ट्र) का एक जीर्णोद्धारित मालगुजारी टैंक

और इनमें से कई तो दो-तीन सदियों पुराने हैं। ये टैंक अमूमन किसानों, मछुआरों और उनके आस-पास रहने वाले समुदायों के लिए आजीविका का एक अनिवार्य स्रोत हैं। ये टैंक धान की खेती के लिए पानी के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में कार्य करते हैं, जो इस क्षेत्र की मुख्य फसल है। कृषि जल एवं आजीविका प्रदान करने के अलावा, ये विभिन्न वनस्पतियों और जीवों को प्राकृतिक पर्यावास देकर एक अनूठे पारिस्थितिकी तंत्र का भी निर्माण करते हैं। इन टाँकों की भूजल स्तर को बनाए रखने में भी एक महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ग्राम समितियों और मत्स्य-सहकारी समितियों द्वारा गठित जल-प्रबंधन समितियां इन तालाबों और नहर संरचनाओं के रखरखाव और मरम्मत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

वर्ष 2007 में, केंद्रीय भूजल बोर्ड (CGWB) ने भंडारा जिले के भू-आकृति विज्ञान का अध्ययन किया और मालगुजारी टैंकों के संरक्षण की सिफारिश की। वर्ष 2008-09 में महाराष्ट्र शासन के जल संसाधन विभाग के लघु सिंचाई अनुभाग, भंडारा द्वारा ''यांत्रिक संगठन'' की मशीनरी का उपयोग कर इन टैंकों के जीर्णोद्धार के कार्यक्रम की शुरुआत की थी। इस कार्यक्रम के अंतर्गत 2008 में भंडारा से 35 किलोमीटर दूर स्थित जंभोरा के मालगुजारी टैंक को सर्वप्रथम जीर्णोद्धार किया गया।

उपसंहार

नदियों के किनारे ही सभी मानव सभ्यताओं का प्रादुर्भाव एवं विकास हुआ था। नदियां केवल इस भूमि के प्राण ही नहीं हैं बल्कि मानव संस्कृतियों की जननी भी हैं। हमारे पूर्वज नदियों को देवी मानकर उनकी पूजा किया करते थे। वैनगंगा नदी विदर्भ क्षेत्र की सबसे बडी नदी है एवं महाराष्ट्र की पाँचवी सबसे बडी नदी है। यह नदी गंगा नदी की तरह पवित्र है एवं उसी प्रकार इस नदी को भी पूजा जाता है। वैनगंगा दक्षिणीय मध्य प्रदेश से उद्गमित होकर पूरे विदर्भ क्षेत्र का पालन करती है। सतपुड़ा के सघन वनीय क्षेत्र में होने वाली वर्षा ही विदर्भ की जीवांदायिनी वैनगंगा के जल प्रवाह का मुख्य स्त्रोत। वैसे तो विदर्भ एक सूखा ग्रस्त क्षेत्र है किन्तु जलवायु के बदलते प्रभावों के चलते पिछले कुछ वर्षों में क्षेत्र में बाढ़ की समस्या भी देखी गई है। महाराष्ट्र के विदर्भ में वर्ष 2020 के वर्षाकाल में वैनगंगा नदी का जलस्तर बढ़ने की वजह से बाढ़ आ गई थी। हाल के वर्षों में पूर्व विदर्भ में पेयजल आपूर्ति के मामले में सबसे महत्वपूर्ण वैनगंगा नदी के जल की गुणवत्ता में कमी के समाचार भी सुनने में आये हैं। पौराणिककाल से ही वैनगंगा इस क्षेत्र में जलापूर्ति का एक मात्र साधन रही है। जिसे अतीत में मालगुजारी टांकों के माध्यम से सशक्त भी किया गया था। किन्तु वर्तमान में हम इसके गौरवशाली इतिहास को भूल गये हैं। शहरों के दूषित एवं अपशिष्ट जल से इसकी पवित्रता को खंडित किया जा रहा है। कुछ अध्ययनों में इस नदी के पानी व उसमें पल रही मछलियों की जांच करने पर उसमें कैडमिएम नामक पदार्थ अधिक मात्रा में पाया गया है। इससे वैनगंगा का पानी प्रदूषित व खतरनाक साबित हुआ है। वैनगंगा बेसिन में स्थित मालगुजारी टैंकों के पुनरुद्धार परियोजनाओं ने दिखाया है कि जल संरक्षण के लिए बड़े बांधों के निर्माण की तुलना में ये एक सुगम, सरल और सस्ते तरीके हैं । इस तरह की छोटी-छोटी पुनरुद्धार परियोजनाओं की लागत तो कम होती ही हैं साथ ही साथ इन्हे क्रियान्वित करना भी आसान होता है। इन राज्य-समुदाय-स्वामित्व की छोटी किन्तु प्रभावशाली परियोजनाओं द्वारा विदर्भ क्षेत्र की गंगा अर्थात वैनगंगा बेसिन में जल संरक्षण कर क्षेत्र के भावी जल संकट और चुनौतियों से निपटा जा सकता है।

संपर्क करें
डॉ. मनीष कुमार नेमा
राष्ट्रीय जलविज्ञान संस्थान
रूड़की।